Sub:- Philosophy
Class:- B.A, Part-II (Hons)
Paper:- IV

लाइबनीज : चिद्बिन्दु सिद्धान्त (अन्तिम भाग)
(Leibniz: Doctrine of Monads) (Final Part)

पिछले भाग में हमने चर्चा कि के बिद्-बिन्दुओं को विभाज्य नहीं किया जा सकता। चिद्-बिन्दु अविनाशी है उसमे गुणात्मक भेद है और चिद्बिन्दु की विशेषताएँ क्या है इत्यादि। अब लाइबनीज के अनुसार चिद्बिन्दुओं में अन्तर्भूत चित्-शक्ति की विभिन्नता के कारण इनकी पाँच अलग-अलग अवस्थाएँ है। जड़-जगत् (Material world), वनस्पति जगत् (Plant world), पशु जगत् (Animal world), मानव जगत् (Human world), या चेतन जगत् (Spirit world) तथा ईश्वर जगत् (World of God)। ये पाँच इनकी अलग-अलग अवस्थाएँ है जिन पर संक्षेप में विचार करना आवश्यक है।

जड़ जगत् (Material world) के अन्तर्गत वे चिद्बिन्दु आते है जिनमे चेतना नहीं होती।

जैसे पत्थर, मिट्टी इत्यादि ऐसी वस्तुएं है जिनमें चेतना नहीं होती है। इन वस्तुओं का निर्माण वैसे चिद्बिन्दुओं से होता है जो पूर्णतः अचेतन है। इसलिए इसे चिद्बिन्दुओं की निम्नतर अवस्था कहा गया है।

वनस्पति जगत् (Plant world) उन चिद्बिन्दुओं का संसार है जिसमें उपचेतना अथवा अर्धचेतना ही होती है। दूसरे शब्दों में इनमें चेतना तो होती है पर सुसुप्तावस्था में। जैसे फल, फूल, पौधे इत्यादि उस कोटी के चिद्बिन्दुओं से बने है जिनमें चेतना अत्यन्त ही गौण रूप में निहित होती है। वनस्पति जगत् को लाइबनीज ने सरल अथवा नग्न चिद्बिन्दु (Simple or naked monads) कहा है।

पशु जगत् (Animal world) चिद्बिन्दुओं की तीसरी अवस्था है जिसमें चेतना जागृत अवस्था में रहती है। इस कोटि के अन्तर्गत वैसे चिद्बिन्दु आते है जिनमें चित्-शक्ति निहित होती है पर पूर्णतः स्पष्ट नहीं होती। सभी पशु इसी जगत् के सदस्य है। लाइबनीज ने इनके सम्बन्ध में कहा है कि इन चिद्बिन्दुओं में सादृश्य महत्व का बोध्य नहीं रहता।

मानव जगत् (Human world) उन चिद्बिन्दुओं का विश्व है जिनमें ज्ञान का स्पष्ट रूप वर्तमान रहता है। इस अवस्था में मानव को अपनी आत्मा का बोध होने लगता है, वह अपनी आत्मा के स्वरूप को समझने लगता है।

वनस्पति जगत्, पशु जगत् और मानव जगत् में जिन चिद्बिन्दुओं से पौधों, पशुओं, और मानव की रचना होती है उन चिद्बिन्दुओं के केन्द्र में एक चिद्बिन्दु ऐसा होता है जो अन्य सारे चिद्बिन्दुओं पर शासन करता है उसी को ~~लाइबनीज~~ लाइबनीज ने आत्मा कहा है।

चिद्बिन्दुओं की इन चार अलग-अलग अवस्थाओं से पूर्णतः भिन्न और सर्वोपरि अवस्था ईश्वर जगत् (World of God) है जिसमें एक और केवल एक चिद्बिन्दु है जिसे लाइबनीज ने परम चिद्बिन्दु अर्थात ईश्वर चिद्बिन्दु कहा है। लाइबनीज के अनुसार यह परम चिद्बिन्दु ही प्रकृति के अन्य सारे चिद्बिन्दुओं का एकमात्र निर्माता और विनाशक है।

इस प्रकार लाइबनीज के चिद्बिन्दु सिद्धान्त के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उन्होंने द्रव्य को शक्ति के रूप में माना है

और उसे चिद्बिन्दु की संज्ञा दी है। चूंकि ये चिद्बिन्दु जो परम हैं और संख्या में अनन्त तथा अभौतिक इसलिए लाइबनीज को आध्यात्मिक अनेकवादी प्रत्ययवादी (Metaphysical-Pluralistic Idealist) कहा जाता है।

चिद्बिन्दु सिद्धान्त का मूल्यांकन → सर्वप्रथम यह कहा जा सकता है कि लाइबनीज ने चिद्बिन्दुओं को नित्य, परम, अविभाज्य और अविनाशी माना है और इसके साथ ही यह बताया है कि इनका निर्माण ईश्वर अथवा परम चिद्बिन्दु के द्वारा हुआ है। पर लाइबनीज का यह मत पूर्णतः आत्म विरोधी है क्योंकि कोई भी वस्तु जिसका निर्माण होता है उसे परम नहीं कहा जा सकता क्योंकि वह अपने निर्माण के लिए उस सत्ता पर निर्भर करता है जिसने उसका निर्माण किया है।

लाइबनीज के विचारों में दूसरा आत्म-विरोध यह है कि उन्होंने एक ओर चिद्बिन्दुओं को पूर्ण कहा है और दूसरी ओर वे यह भी कहते हैं कि प्रत्येक चिद्बिन्दु विकासित होकर अपने से ऊपर की अवस्था को प्राप्त करना चाहता है और इस कार्य में वह निरन्तर क्रियाशील एवं संलग्न रहता है।

पर यहाँ यह आपत्ति की जा सकती है कि जो पूर्ण है उसमें विकास कैसा? विकास की अपेक्षा तो उसे होती है जो अपूर्ण है। लेकिन हमने देखा है कि लाइबनीज ने चिद्बिन्दुओं को पूर्ण भी माना है और यह भी कहा है कि उनमें विकास होता है, जो आत्मसंगत नहीं।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि लाइबनीज की अनेकता एकता की व्याख्या में समर्थ नहीं। लाइबनीज ने स्पीनोजा के विरुद्ध यह आक्षेप लगाया था कि स्पीनोजा सत्य की संख्यात्मक एकता को मानते हैं जिससे प्रकृति में दिखने वाली अनेकता की व्याख्या नहीं की जा सकती। पर उनका यह तर्क स्वयं उन पर भी लागू होता है। यदि सत्य अनेक है तो फिर प्रकृति में दिखने वाली एकता की व्याख्या कैसे की जा सकती है। ~~लाइबनीज~~

उपरोक्त आक्षेपों को देखते हुए हम कह सकते हैं कि लाइबनीज का चिद्बिन्दु सिद्धान्त पूर्णतः संगत और मान्य नहीं।

Dr. Md. Arshad. Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College
V.K.S.U, Ara.